श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

दिनांक – 11 नवम्बर, 2019

समय – प्रातः 11. 30 बजे

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय परिसर, जोबनेर

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के कुलपति डॉ. जे. एस. सन्धु, डॉ. एम. के. अग्निहोत्री, सहायक महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, समस्त अधिष्ठातागण, निदेशकगण, संकाय सदस्यगण, प्रगतिशील कृषक बंधुओ, छात्र–छात्राओ, मीडिया के प्रतिनिधिगण और छायाकार बन्धुओ।

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के प्रांगण में आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। यहां किसानों के लिए कृषि में आधुनिक तकनीक का प्रशिक्षण दिया जायेगा, विश्वविद्यालय का यह प्रयास सराहनीय है। वर्तमान में खेती में जैविक खाद विशेष रूप से कार्बनिक खाद की मात्रा बहुत कम हो गई है। मै चाहूंगा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से वैज्ञानिक किसानों को बताएं कि जैविक खाद का कैसे सामयिक उपयोग हो और कृषि का उत्पादन किस तरह बढ़ाया जाए।

मुझे विश्वास है कि किसानों को आय बढ़ाने के तरीके भी इस प्रशिक्षण में बताये जायेंगे। कृषि के वैज्ञानिक किसानों को यह भी समझाने का प्रयास करें कि किसानों को कृषि में कीटनाशकों और उर्वरको का कम से कम उपयोग कैसे किया जाये ताकि कृषि की लागत कम हो सके और किसानों की आय बढ़ सके।

हमारी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। हमारी जनसंख्या का दो तिहाई हिस्सा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करता है। हमारे देश की राष्ट्रीय आय का लगभग छठा भाग कृषि से आता है। बढ़ती हुई आबादी व जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुये कृषि भूमि की उत्पादकता बढ़ाने पर कृषि वैज्ञानिकों को निरन्तर शोध करने की आवश्यकता हैं।

किसानों की आय बढ़ाने करने के लिए पारम्परिक एवं आधुनिक प्रौद्योगिकियों की समन्वित क्षमता का सदुपयोग करना आवश्यक है।

हरित क्रांति से देश में फसलों के क्षेत्रफल, कृषि उत्पादन तथा उत्पादकता में वृद्धि के फलस्वरूप आत्मनिर्भरता हासिल हुई है। वर्तमान में फल एवं सब्जी उत्पादन में सार्थक वृद्धि एवं गुणवत्ता में सकारात्मक उन्नयन हुआ है, किन्तु किसानों को जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों से काफी नुकसान उठाना पड़ता है।

समन्वित मौसम प्रबन्धन एवं हाईटैक तकनीक के साथ–साथ किसानों की सजगता बढ़ाने की आवश्यकता है। कृषि वैज्ञानिकों को मुश्तैदी के साथ कार्य करके किसानों को जागरूक करना होगा।

जैविक खेती, जल संरक्षण तथा किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकी, मृदा स्वास्थ्य तथा उर्वरकों के समुचित उपयोग के प्रशिक्षण के लिये कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय हैं।

कृषि प्रौद्योगिकी को कृषक समाज तक पहुँचाने में हमारे कृषि विज्ञान केन्द्र सतत क्रियाशील हैं। इन कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यों को और अधिक गति देने की आवश्यकता है।

किसानों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की प्रायः कमी बनी रहती है। अच्छे बीज की उपलब्धता हम सभी के लिए एक चुनौती है। इसके लिए सभी संस्थागत स्तरों पर प्रयास आवश्यक हैं। अधिक उपज एवं कम समय में पकने वाली किस्मों के बीजों का प्रचार सामुदायिक विकास केन्द्रों के माध्यम से किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय को उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के वितरण की व्यवस्था को विश्वसनीय एवं सुनिश्चित करना होगा।

राज्य के कृषि विकास में कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने विभिन्न फसलों की 150 से अधिक उन्नत किस्में विकसित करके महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

गुणवत्तापूर्ण रोजगार उन्मुखी शिक्षा एवं जन–कल्याण के लिए आवश्यक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय को पाठ्यक्रमों को अद्यतन करना होगा। कृषि तकनीक के नए आयामों को भी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करते रहने की आवश्यकता है। मैं कृषि वैज्ञानिकों का आह्वान करता हूँ कि आप समय की मांग के अनुसार किसानों के लिए उपयोगी शोध को बढ़ावा दें।

मैं यहां उपस्थित प्रगतिशील किसानों को बधाई देता हूँ। आप सभी से मेरी अपेक्षा है कि आप लोग कृषि में नवाचार अपनाकर राज्य के अन्य किसानों के लिये प्रेरणा स्त्रोत बनें।

धन्यवाद। जय हिन्द।